राजस्थान सिविल सेवा अपील अधिकरण, जयपुर,

अपील संख्या :—708 / 2024

मुनेश मीणा

—अपीलार्थी

बनाम

1. राजस्थान राज्य जरिये शासन सचिव, वन विभाग, सचिवालय जयपुर।
2. प्रधान मुख्य वन संरक्षक, जयपुर।

—प्रत्यर्थीगण

आदेश की दिनांक : 13.03.2024

उपस्थित —

अपीलार्थी की ओर से : श्री विनोद कुमार शर्मा, अधिवक्ता

समक्ष :— अनन्त भण्डारी, सदस्य (न्यायिक)
शुचि शर्मा, सदस्य

आदेश

1. मामलें की आवश्यक प्रकृति को देखते हुए राजस्थान सिविल सेवा (सेवा मामलों के लिए अपील अधिकरण) अधिनियम, 1976 की धारा 4ए के उपबन्ध में शिथिलिता प्रदान करते हुए उक्त अपील की सुनवाई की गई।
2. अपीलार्थी के विद्वान् अधिवक्ता द्वारा प्रस्तुत अपील में वर्णित तथ्य संक्षेप में इस प्रकार है कि अपीलार्थी वर्तमान में वनपाल के पद पर गंगापुर सिटी, उप वन संरक्षक, सवाईमाधोपुर में कार्यरत है। प्रत्यर्थी विभाग के आदेश दिनांक 20.02.2024 (अनुलग्नक—1) द्वारा अपीलार्थी का स्थानान्तरण वर्तमान पदस्थापित स्थान से उप वन संरक्षक, करौली में किया गया है। अपीलार्थी का कथन है कि आलोच्य आदेश में अपीलार्थी का स्थानान्तरण उप वन संरक्षक, करौली किया जाना दर्शाया गया है परन्तु अपीलार्थी को वनपाल का क्या पद दिया गया है, यह नहीं दर्शाया गया है। उनका यह भी तर्क है कि अपीलार्थी का स्थानान्तरण बिना किसी प्रशासनिक आवश्यकता के अल्प समय में किया गया है, जो उचित नहीं है।
3. हमने अपीलार्थी के विद्वान् अधिवक्ता द्वारा दिये गये तर्को पर विचार किया एवं पत्रावली का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया।
4. प्रकरण के तथ्यों एवं परिस्थितियों से प्रकट होता है कि अपीलार्थी को आलोच्य आदेश से एक जिले से दूसरे जिले में स्थानान्तरित किया गया है, जिसके लिये प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राजस्थान सक्षम अधिकारी है। अपीलार्थी को नये जिले में उप वन संरक्षक के अधीन लगाया गया है, जिसमें हम कोई त्रुटि होना नहीं पाते हैं। प्रशासनिक आवश्यकताओं में कार्मिक की सेवाएं किस स्थान पर ली जानी है, इसके निर्णय का अधिकार प्रत्यर्थी विभाग को है। माननीय उच्चतम न्यायालय ने **शिल्पी बोस बनाम बिहार राज्य** (ए.आई.आर. 1991 एस.सी. 532)

के प्रकरण में राजकीय कार्मिकों के स्थानान्तरण के विषय में निम्न प्रकार अवधारित किया है :—

> *"In our opinion, the Courts should not interfere with a transfer Order which are made in public interest and for administrative reasons unless the transfer Orders are made in violation of any mandatory statutory Rule or on the ground of malafide. A Government servant holding a transferable post has no vested right to remain posted at one place or the other, he is liable to be transferred from one place to the other. Transfer Orders issued by the competent authority do not violate any of his legal rights. Even if a transfer Order is passed in violation of executive instructions or Orders, the Courts ordinarily should not interfere with the Order instead affected party should approach the higher authorities in the Department. If the Courts continue to interfere with day-to-day transfer Orders issued by the Government and its subordinate authorities, there will be complete chaos in the Administration which would not be conducive to public interest."*

5. उपर्युक्त समस्त विवेचन के आधार पर अपीलार्थी की अपील बलहीन एवं सारहीन होने से कारण मय स्थगन प्रार्थना पत्र के इसी प्रक्रम पर खारिज की जाती है।

(शुचि शर्मा)
सदस्य

(अनन्त भंडारी)
सदस्य(न्यायिक)